International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 47-48

पदमावत की सामासिक–संस्कृति

Kumar Manish
Tilka Manjhi Bhagalpur University, Bhagalpur, Bihar, India

प्रस्तावना

मलिक मुहम्मद जायसीकृत 'पदमावत' सामासिक–संस्कृति का चित्रण करने वाला अद्वितीय महाकाव्य है। इसमें मध्यकालीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं की झलक दृष्टिगत् होती है। इसमें हिन्दू एवं इस्लाम संस्कृति प्रमुखता से चित्रित हुई है। हिन्दू संस्कृति का निर्माण रामायण एवं महाभारत की कथा पर हुई है; जबकि इस्लाम संस्कृति का निर्माण कुरानशरीफ की आयतों से हुआ है। जायसी ने 'पदमावत' की रचना दानों संस्कृतियों के सम्मिश्रण से की है।

महान कवि आदर्श समाज एवं संस्कृति का स्वप्न देखते हैं। उनकी कृति उनके स्वप्न का मूर्त्त रूप होती है। जायसी ने 'पदमावत' में सामासिक–संस्कृति के स्वप्न को मूर्त्त रूप देने का स्तुत्य प्रयास किया है। उन्होंने सूफी साधना के पथ का निर्माण हिन्दू एवं इस्लाम धर्म के सम्मिश्रण से की है। कवि ने रामायण की कथा को 'पदमावत' में उद्धृत कर सामाजिक–सांस्कृतिक सत्य के उद्घाटन का प्रयास किया है।

संसार की सभी प्रमुख संस्कृतियों का इतिहास धर्म एवं अधर्म के मध्य के संघर्ष का सजीव उदाहरण है। इसमें धर्म की जय एवं अधर्म के पराजय का शाश्वत चित्र अंकित है। जायसी का जन्म इस्लाम धर्मावलंबी के गृह हुआ था। उन्होंने हिन्दू धर्म का ज्ञान साधुओं की संगति के फलस्वरूप प्राप्त किया था। इस कारण 'पदमावत' में सामासिक–संस्कृति की समरसता का उदात्त चित्र अंकित हुआ है।

भारतीय–संस्कृति में बाह्य संस्कृति को समाहित करने की अपूर्व क्षमता है। सूफी साधना का जन्म ईरान में हुआ था। वहाँ से इसका प्रचार–प्रसार भारत की धरती पर हुआ। जायसी ने 'पदमावत' में सूफी साधना की सभी अवस्थाओं का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। 'पदमावत' उनके विशद ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। भारतीय संस्कृति की धुरी धर्म है। इसके बिना संस्कृति की कल्पना नहीं की जा सकती है। यहाँ की संस्कृति की सभी विशेषताएँ धर्म के इर्द –गिर्द घूमती हैं। जायसी को भारतीय–संस्कृति की श्रेष्ठता में धर्म के महत्व का ज्ञान था। उन्होंने सूफी साधना के ज्ञान को भारत के समाज में प्रसिद्ध लोककथा में सम्मिश्रित कर निर्मित किया है।

भारतीय संस्कृति में श्रद्धा, भक्ति एवं प्रेम को ईश्वर की प्राप्ति का प्रमुख साधन माना जाता है। भक्त इन साधनों के द्वारा ईश्वर तक पहुँचता है। इनमें से, जायसी ने प्रेम को ईश्वर तक पहुँचने के पंथ का निरूपण 'पदमावत' में किया है। उन्होंने 'पदमावत' में राजा रत्नसेन एवं पदमावती की प्रेमकथा में भक्त एवं भगवान् के प्रेम संबंध को चित्रित किया है।

भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है। विदेशियों ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करने हेतु बहुत–से आक्रमण किये; किंतु इसकी महानता आज भी अक्षुण्ण है। इसके मूल भाव को कोई नष्ट नहीं कर पाया। इस संस्कृति पर इस्लाम के आक्रमण हुए। उन्होंने हिंदू संस्कृति को नष्ट करने के प्रयत्न किये; किंतु हिंदू संस्कृति में इस्लाम संस्कृति का सम्मिश्रण हो गया। जायसी के 'पदमावत' की रचना में निहित उद्देश्य, दोनों संस्कृतियों के मध्य भेद को दूर कर, प्रेम का संचार करना था।

राष्ट्र की सांस्कृतिक श्रेष्ठता का रूप वहाँ के साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है। 'पदमावत' में भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल स्वरूप दृष्टिगत होता है। कवि ने इस ग्रंथ की रचना का आरंभ ईश्वर के नाम का स्मरण कर किया है। जायसी 'स्तुति खंड' में लिखते हैं :

''सुमिरों आदि एक करतारू। तेहि जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू।''[1]

यह मत भारत की संस्कृति के अनुरूप है। जायसी ने भारतीय साहित्य की परंपरा का पालन किया है। भारतीय साहित्य के महान् कवियों की कृति का प्रारंभ ईश्वर की वंदना से हुआ है। 'पदमावत' सांस्कृतिक समरसता के उदाहरण का श्रेष्ठ काव्य है। इसमें हिन्दू एवं इस्लाम धर्म की रीति के अनुसार जगत् के सृजन की कथा मिलती है। जायसी सिद्ध पुरूष थे। वे समाज में प्रेम द्वारा सौहार्द की स्थापना करना चाहते थे। संसार में प्रेम ही एकमात्र वस्तु है, जो वैमनस्यता को दूर कर सौहार्द की स्थापना कर सकता है। कवि ने 'पदमावत' की रचना प्रेम को केंद्र बिंदु में रखकर की है। जायसी ने 'स्तुति खंड' में सामासिक–संस्कृति का उदात्त चित्र प्रस्तुत किया है। वे लिखते हैं:

''सुमिरों आदि एक करतारू। तेहि जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू।।
कीन्हेसि प्रथम जोति परकासू। कीन्हेसि तेहि पिरीत कैलासू।।
कीन्हेसि अगिनि, पवन, जल, खेहा। कीन्हेसि बहुतै रंग उरेहा।।
कीन्हेसि धरती, सरग, पतारू। कीन्हेसि बरन बरन औतारू।।
कीन्हेसि दिन, दिनअर, ससि, राति। कीन्हेसि नखत, तराइन, पाँती।।
कीन्हेसि धूप, सीउ और छाँहा। कीन्हेसि मेघ, बीजु तेहि माँहा।।
कीन्हेसि सप्त मही बरम्हंडा। कीन्हेसि भुवन चौदहो खंडा।।
कीन्ह सबै अस जाकर दूसर छाज न काहि।
पहिले ताकर नावै लै कथा करों औगाहि।।''[1]

इन चौपाइयों में हिन्दू धर्म की रीति के अनुसार ईश्वर की स्तुति की गई है। जायसी ने हिन्दू धर्म में वर्णित कैलाश, सप्त तल, चौदह भुवन आदि का वर्णन किया है। पुनः वे इस्लाम धर्म की रीति के अनुसार ईश्वर की वंदना करते हैं। जायसी लिखते हैं :

''कीन्हेसि पुरूष एक निरमरा। नाम मुहम्मद पूनौ करा।।
प्रथम जोति बिधि ताकर साजी। औ नहिं प्रीति सिहिटि उपराजी।।
दीपक लेसि जगत कहँ दीन्हा। भा निरमल जग, मारग चीन्हा।।
जौ न होत अस पुरूष उजारा। सूझि न परत पंथ अँधियारा।।
दूसरे ठाँव दैव वै लिखे। भए धरमी जे पाढ़त सिखे।।

जेहि नहिं लीन्ह जनम भरि नाऊँ। ता कहँ कीन्ह नरक महँ ठाऊँ।।
जगत बसीठ दई ओहि कीन्हा। दुइ जग तरा नावँ जेहि लीन्हा।।
गुन अवगुन बिधि पूछब। होइहि लेख औ जोख।।
वह बिनउब आगे होइ, करब जगत कर मोख।।''[2]

इस प्रकार, जायसी ने 'पदमावत' में भारतीय संस्कृति की विशेषता, शुभ कार्य के पूर्व ईश्वर की वंदना की परंपरा का पालन किया है। उन्होंने 'पदमावत' के 'स्तुति खंड' में हिन्दू एवं इस्लाम धर्म में ईश्वर की वन्दना की परंपरा के अनुरूप वंदना की है। इसमें जायसी की सामासिक–संस्कृति की स्थापना में अविचल निष्ठा दिखती है। यह गंगा–जमुनी संस्कृति की प्रमुख विशेषता है।

भारतीय संस्कृति की उन्नति में ऋषि–मुनियों के तप का महत्वपूर्ण योगदान है। जायसीकृत 'पदमावत' इस परंपरा की प्रमुख कड़ी है। इस महाकाव्य में संसार के सभी धर्मों की विशेषताएँ समाहित हैं। जायसी को भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता का ज्ञान था। यहाँ की संस्कृति हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, जैन, पारसी आदि धर्मों की सांस्कृतिक बहुलता का अनुपम सम्मिश्रण है। जायसीकृत 'पदमावत' में इस साझी संस्कृति की विशेषता दृष्टिगत् होती है।

जायसी ने सूफी साधना के रहस्य को रत्नसेन और पदमावती द्वारा चित्रित किया है। उत्तर भारत के घर–घर में रत्नसेन एवं पदमावती की प्रेमकथा प्रसिद्ध है। इस कथा में इस्लाम की कट्टरता से दूर सूफी साधना का निरूपण उनकी सामासिक–संस्कृति के प्रति श्रद्धा को प्रकट करता है।

राजा रत्नसेन क्षत्रिय राजकुमार और पदमावती क्षत्रिय राजकुमारी हैं। इन दोनों के प्रेम संबंध में बादशाह अलाउद्दीन बाधक होते हैं; जो इस्लाम धर्मावलंबी हैं। कवि ने हिन्दू एवं इस्लाम संस्कृति के मध्य संस्कृति का चित्रण कर सांस्कृतिक संघर्ष को रूपायित किया है। इसमें कवि ने सत्य की जय को चित्रित किया है। राजा रतनसेन सत्य और बादशाह अलाउद्दीन असत्य के प्रतीक पात्र हैं। राजा रत्नसेन बादशाह अलाउद्दीन को पराजित कर पदमावती को प्राप्त करते हैं। जायसी ने यहाँ असत्य पर सत्य की विजय को चित्रित कर, जीवन के शाश्वत मूल्य की स्थापना की है।

भारतीय साहित्य में जीवन के शाश्वत मूल्य की स्थापना हुई है। यह भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। यहाँ की संस्कृति में अधर्म एवं धर्म का संघर्ष और उसमें धर्म की जय की कथा अति प्राचीन है। हिन्दू संस्कृति में धर्म अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

'पदमावत' में सामासिक–संस्कृति का श्रेष्ठ उदाहरण राजा रत्नसेन एवं पदमावती के विवाह का वर्णन है। इस विवाह में भारतीय संस्कृति के अनुसार विध–व्यवहार किया जाता है। वर एवं वधू पक्ष द्वारा निमंत्रण–पत्र बाँटना, बारात सजाकर वर पक्ष का वधू पक्ष के घर पहुँचना, शास्त्रोक्त विधि से पाणि ग्रहण आदि कार्य हिन्दू संस्कृति की विशेषता को इंगित करता है।

'' आइ बजावति बेठि बराता। पान, फूल सेंदूर सब राता।।
चहै सोने कर चित्तरसारी। लेइ बरात सब तहाँ उतारी।।
माँझ सिंघासन पाट सवारा। दूलह आनि तहाँ बैसारा।।
कनक खंभ लागे चहुँ पाँती। मानिक दिया बरहिं दिन राती।।
भएउ अचल ध्रुव जोगि पखेरू। फूलि बैठ थिर जैस सुमेरू।।
आज दैउ हौं कीन्ह सभागा। जत दुख कीन्ह नेग सब लागा।
आजु सूर ससि के घर आवा। ससि सूरहि जनु होइ मेरावा।।
आजु इंद्र होइ आएउँ, सजि बरात कबिलास।
आनु मिलि मोहि अपछरा, पूजी मन कै आस।।''

जायसी ने इस्लाम संस्कृति की विशेषताओं का चित्रण 'पदमावत' में किया है। बादशाह अलाउद्दीन का राज्य–संचालन इस्लामी संस्कृति के अनुसार होता है।

''बादशाह सब जाना बूझा। सरग पतार हिये महँ सूझा।।
जौ राजा अस सजग न होई। काकर राज, कहाँ कर कोई।।
जगत भार उन्ह एक सँभारा। तो थिर रहै सकल संसारा।।
औ अस ओहिक सिंघासन ऊँचा। सब काहू पर दिस्टि पहूँचा।।
सब दिन राजकाज सुख भोगी। रैनि फिरै घर घर होइ जोगी।।
राव रंक जावत सब जाती। सब कै चाह लेइ दिन राती।।
पंथी परदेसी जत आवहिं। सब कै चाह दूत पहुँचावहिं।
एहू बात तहँ पहुँची, सदा छत्र सुख छाँह।
बाम्हन एक बार है, कंकन जराऊ बाँह।।''

जायसी ने 'पदमावत' में हिन्दू एवं इस्लामी संस्कृति के मध्य युद्ध के दृश्य का चित्र अंकित किया है।

''साह आइ चितउरगढ़ बाजा। हस्ती सहस बीस सँग साजा।।
ओनइ आए दूनौ दल साजे। हिन्दू तुरूक दुवौ रन गाजे।।''

जायसी सामासिक–संस्कृति का चित्रण कर हिन्दू एवं इस्लाम संस्कृति के मध्य की खाई को पाटना चाहते थे। वे 'पदमावत' में भारतीय संस्कृति का मूल भाव अध्यात्म का कुशलतापूर्वक वर्णन करते हैं। उन्होंने हिन्दू एवं इस्लाम धर्म की विशेषताओं का चित्रण सूफी साधना के द्वारा की है। साधक साधना द्वारा ईश्वर की प्राप्ति का यत्न करता है। जायसी ने इस तथ्य को सूफी साधना द्वारा निरूपित किया है।

राजा रत्नसेन का पदमावती की प्राप्ति हेतु विकलता में साधक का ईश्वर की प्राप्ति का चित्रण हुआ है। जायसी इस्लाम की कट्टरता से अलग ईश्वर की उपासना का मार्ग प्रेमपंथ निकालते हैं। यह वैष्णव प्रधान प्रेममार्ग है।

जायसी के समय भारतवर्ष में इस्लाम एवं हिन्दू संस्कृति के मध्य भेद था। अतः उन्होंने इस भेद को दूर करने के लिए सूफी साधना के ज्ञान को हिन्दुओं के घर में प्रचलित राजा रत्नसेन एवं पदमावती की प्रेमकथा द्वारा चित्रित किया है। इस कारण यह प्रेमकाव्य सामासिक –संस्कृति की रक्षा का श्रेष्ठ उदाहरण हो गया है।

संदर्भः

1. शुक्ल, जायसी ग्रंथावली,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,पाँचवाँ संस्करण,स्तुति खंड, पृ0–1,दो0–1
2. वही, पृ0–1,दो0–1
3. वही, पृ0–4,दो0–11
4. वही, रत्नसेन–पदमावती विवाह खंड, पृ0–117,दो0–8
5. वही, राघवचेतन दिल्ली गमन खंड, पृ0–195, दो0–2
6. वही, राजा बादशाह युद्ध खंड, पृ0–217, दो0–1